उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया : व्याख्या के आधार

अध्याय 1

बाइबल के व्याख्या-शास्त्र का परिचय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना 1
शब्दावली 1
बाइबल का व्याख्या-शास्त्र 2
व्याख्या-शास्त्र संबंधी प्रक्रियाएँ 3
तैयारी 3
जाँच 4
अनुप्रयोग 4
वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र 5
बाइबल वाले बुनियाद 5
उदाहरण 6
प्राथमिकताएं 8
तैयारी 8
जाँच 9
अनुप्रयोग 9
भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र 10
बाइबल वाले बुनियाद 11
उदाहरण 12
प्राथमिकताएं 15
तैयारी 15
जाँच 17
अनुप्रयोग 17
उपसंहार 19

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया :
व्याख्या के आधार

अध्याय एक

बाइबल के व्याख्या-शास्त्र का परिचय

प्रस्तावना

हम सभी जानते हैं कि वास्तव में छोटे बच्चे जितना जानते हैं उसकी तुलना में वे अक्सर सोचते हैं कि वे बहुत कुछ जानते हैं। वे अपनी माँ को खाना पकाते हुए देखते हैं, थोड़ी बहुत मदद करते हैं, और मान लेते हैं कि वे यह काम स्वयं से करने के लिए बहुत कुछ जानते हैं। वे अपने पिता को अपना काम करता हुआ देखते हैं, वे एक या दो बार उस काम में हाथ बटाते हैं, और सोचते हैं कि वे वह सब कुछ जानते हैं जो उनके पिता जानते हैं। लेकिन कुछ समय बाद, बच्चों को आमतौर पर पता चलता है कि जितना उन्होंने कभी सोचा होगा उससे ज्यादा उनके पास सीखने के लिए अभी बहुत कुछ बाकी है।

दुर्भाग्य से, जब बाइबल की व्याख्या करने जैसी महत्वपूर्ण बात आती है, तो वयस्क लोग भी अक्सर यही गलती करते हैं। हम में से अधिकांश लोग अपनी बाइबल को नियमित रूप से पढ़ते हैं; हममें से कुछ ने कई वर्षों से ऐसा किया है। इसलिए, अक्सर हम मान लेते हैं कि पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने के बारे में हम पर्याप्त मात्रा में जानते हैं और ऐसा करने लगते हैं। लेकिन बाइबल की व्याख्या उन चीज़ों में से एक है जो वास्तव में जितनी मुश्किल है उसकी तुलना में यह बहुत सरल लग सकती है। और जब हम इस बात पर सावधानीपूर्वक ध्यान करने में समय लगाते हैं कि बाइबल की व्याख्या करने में क्या शामिल है, तो अक्सर हम पाते हैं कि जितना हमने कभी सोचा था उससे कहीं अधिक हमारे पास सीखने के लिए है।

हमारी श्रृंखला *उसने हमें पवित्र शास्त्र दिया* का यह पहला अध्याय है: *व्याख्या के आधार।* इस श्रृंखला में, हम बाइबल की व्याख्या पर कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों का पता लगाएंगे और बाइबल को समझने की अपनी योग्यता को सुधारने के तरीकों की जाँच करेंगे। हमने इस अध्याय का नाम रखा है "बाइबल के व्याख्या-शास्त्र का परिचय।" यह अध्याय सही और वैज्ञानिक रीति से बाइबल की व्याख्या के लिए एक मूलभूत रूपरेखा को प्रस्तुत करेगा।

बाइबल के व्याख्या-शास्त्र के लिए हमारा परिचय तीन मुख्य भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली को प्रस्तुत करने के द्वारा हम अपने विषय के लिए एक अभिविन्यास प्राप्त करेंगे। दूसरा, व्याख्या-शास्त्र के लिए हम "वैज्ञानिक" दृष्टिकोणों का पता लगाएंगे जो वैज्ञानिक रीति से बाइबल की व्याख्या करने को चित्रित करते हैं। और तीसरा, हम पारंपरिक शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को प्रयोग करने के मूल्य को देखेंगे। आइए कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली के साथ शुरूआत करें।

शब्दावली

प्रमुख शब्दावली को गलत रीति से समझना किसी भी चर्चा में भ्रम का एक बड़ा स्रोत हो सकता है। इसलिए, अपने अध्ययन के लिए हम कई शब्दों को पेश करेंगे। सबसे पहले, हम इस बात को देखेंगे कि बाइबल के व्याख्या-शास्त्र से हमारा क्या तात्पर्य है। और दूसरा, हम व्याख्या-शास्त्र की तीन प्रक्रियाओं को देखेंगे। आइए सबसे पहले बाइबल के व्याख्या-शास्त्र की अवधारणा को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बाइबल का व्याख्या-शास्त्र

"व्याख्या-शास्त्र" ईश्वरीय-ज्ञान और बाइबल अध्ययनों में एक आम शब्द है, लेकिन हम इसका उपयोग अक्सर अपने दैनिक जीवनों में नहीं करते हैं। हम में से कई लोग ध्यान देंगे कि "व्याख्या-शास्त्र" शब्द यूनानी शब्दों के समूह से निकला है जिसमें देवताओं के पौराणिक दूत "हर्मेस" का नाम शामिल है। यह शब्द अपने आप में यूनानी शब्दों के एक समूह से आया है जो क्रिया *हर्मेनेयूओ* से संबंधित है, जिसका अर्थ है "व्याख्या करना" या "समझाना।" इसलिए, विस्तृत रूप में कहें तो जब हम व्याख्या-शास्त्र का उल्लेख करते हैं, तो हमारे मन में किसी प्रकार के संदेश या संवाद की व्याख्या या स्पष्टीकरण है।

फ्रेडरिक श्लायरमाकर को अक्सर आधुनिक व्याख्या-शास्त्र का पिता कहा जाता है, जो कि सन् 1768 से 1834 तक रहे थे। 1819 में उन्होंने सभी साहित्य को समझने के लिए "सामान्य व्याख्या-शास्त्र" यानी एक एकीकृत सिद्धांत की आवश्यकता की बात की। उन्होंने स्वीकार किया कि हमें अलग-अलग विषयों पर उनके स्वयं के विशेष व्याख्या-शास्त्र के साथ कार्य करना चाहिए, लेकिन उन्होंने तर्क दिया कि सभी व्याख्या-शास्त्र को व्याख्या की एक समान विधि साझा करनी चाहिए।

बीसवीं शताब्दी के अंत तक, प्रमुख विद्वानों ने सामान्य व्याख्या-शास्त्र की आवश्यकता को देखा क्योंकि व्याख्या की प्रक्रियाएं, अध्ययन के कई क्षेत्रों के एक महत्वपूर्ण पहलू बन गए थे। आज, व्याख्या-शास्त्र संबंधी चर्चाएँ दर्शन शास्त्र, साहित्य और कलाओं में दिखाई देते हैं। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और यहाँ तक कि भौतिकी और जीव विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी व्याख्या-शास्त्र उपयोगी है। यह विस्तार इसलिए हुआ है क्योंकि इन क्षेत्रों के कई प्रमुख व्यक्ति इस बात से और अधिक अवगत हो गए हैं कि उनके अध्ययन क्षेत्रों में उन वस्तुओं के अर्थ की व्याख्या करना शामिल है जिनका वे अध्ययन करते हैं।

जैसा कि इस अध्याय का शीर्षक सुझाव देता है, हम मुख्य रूप से बाइबल के व्याख्या-शास्त्र में रुचि रखते हैं, पवित्र शास्त्र के अर्थ और महत्व की व्याख्या करने का अध्ययन। यदि आपने कभी पवित्र शास्त्र पढ़ा है, तो आपने अपने आप को बाइबल के व्याख्या-शास्त्र में शामिल किया है, कम से कम अनौपचारिक रूप से। बाइबल के लिए अनौपचारिक दृष्टिकोण बहुत महत्व रखते हैं, और ये अध्याय उन बातों को आगे समझाते हैं जिन्हें हम में से अधिकांश लोग पहले ही से समझते हैं। लेकिन हम लोग अनौपचारिक व्याख्या-शास्त्र से भी आगे जाएंगे और उन प्रकारों के मुद्दों का पता लगाएंगे जो बाइबल के शैक्षणिक, विद्वत्तापूर्ण व्याख्या में सामने की ओर आते हैं।

> सामान्य व्याख्या-शास्त्र और बाइबल वाले व्याख्या-शास्त्र के बीच अंतर करने और तुलना करने में यह सहायक है। बाइबल सामान्य व्याख्या-शास्त्र के साथ उन विचारों को साझा करती है कि एक क्रिया क्या करती है? शब्द के भेद क्या हैं? व्याकरण, वाक्य-विन्यास आदि क्या है? हम कैसे निर्धारित करते हैं कि जब एक लेखक ने उन शब्दों को लिखा था तो उसका क्या अर्थ था? लेकिन ऐसे विशेष नियम हैं जो मुख्य रूप से बाइबल के व्याख्या-शास्त्र से संबंधित हैं क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन होने का दावा करता है, और इस तरह, यह आधिकारिक है, और यह परमेश्वर को हमें प्रकट करता है। और चूँकि परमेश्वर एक है और परमेश्वर सत्य है, इसलिए बाइबल कभी भी स्वयं का विरोधाभास नहीं करती। और इसलिए, बाइबल के व्याख्या-शास्त्र का एक विशेष पहलू, जो विलक्षण है, वह यह है कि हम पवित्र शास्त्र के सभी आँकड़ों को एक साथ इस धारणा के तहत जोड़ने की कोशिश कर हैं कि वे एक दूसरे का खंडन नहीं करते हैं, बल्कि वे बोलते हैं — हालांकि परमेश्वर के प्रकाशन की विविधता के बारे में — फिर भी वे स्वयं के साथ एक सहमति में भी बोलते हैं।
>
> — रेव्ह. माइक ग्लोडो

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

यह ध्यान में रखते हुए कि बाइबल के व्याख्या-शास्त्र से हमारा क्या तात्पर्य है, हमें दूसरे महत्वपूर्ण शब्द, व्याख्या-शास्त्र संबंधी प्रक्रियाओं की ओर मुड़ना चाहिए, वे मुख्य प्रक्रियाएँ जिनका पालन हम तब करते हैं जब हम बाइबल की व्याख्या करते हैं।

व्याख्या-शास्त्र संबंधी प्रक्रियाएँ

इस पूरी श्रृंखला के दौरान, हम तीन मुख्य व्याख्या-शास्त्र संबंधी प्रक्रियाओं की बात करेंगे: तैयारी, जाँच और अनुप्रयोग। बाइबल की व्याख्या के लिए ये प्रक्रियाएँ इतनी आवश्यक हैं कि इस श्रृंखला में प्रत्येक अध्याय इन तीन क्षेणियों में से किसी एक में आएगा। आइए पहले तैयारी पर नज़र डालते हैं।

तैयारी

इससे पहले कि हम पवित्र शास्त्र के किसी भाग की व्याख्या करना शुरू करते हैं, तैयारी की व्याख्या-शास्त्र संबंधी प्रक्रिया शुरू होती है। और हाँ, इसका अर्थ है कि हम बार-बार तैयारी करते हैं क्योंकि हम बाइबल को बार-बार पढ़ते और अध्ययन करते हैं। एक बहुत ही महत्वपूर्ण अर्थ में, तैयारी अपरिहार्य है क्योंकि कोई भी बाइबल के पास एकदम खाली दिमाग — एक खाली पटिया के समान कभी नहीं आता। हम सभी अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं की मिलावट के द्वारा प्रभावित होकर पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं। चाहे हमें इसका एहसास हो या न हो, लेकिन हर बार जब हम बाइबल को पढना शुरू करते हैं, तो बहुत से प्रभावों ने हमें पवित्र शास्त्र को अच्छी तरह से समझने के लिए पहले ही से तैयार कर दिया है, लेकिन अन्य प्रभावों ने बाइबल की सही व्याख्या के लिए बाधा उत्पन्न की है। इस कारण से, ये अध्याय बाइबल की व्याख्या करने के लिए हमें बहुत अच्छी तरह से तैयार करने पर पूरजोर ध्यान देंगे।

> मैं सोचता हूँ कि पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने के लिए बहुत सारी बातें हैं जो हम स्वयं को तैयार करने के लिए करते हैं, या स्वयं को तैयार करने के लिए हमें करना चाहिए ... पवित्र शास्त्र का अध्ययन करना कठिन काम हो सकता है। ऐसे विवरण हैं जिनकी हमें जाँच करने की आवश्यकता है, और कई, कई सारे विवरण हैं जिन्हें हमें तब याद रखने की आवश्यकता है जब हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन कर रहे होते हैं, और साथ में परमेश्वर की आत्मा को भी सुन रहे होते हैं। और इसलिए हमें अच्छे उपकरणों के साथ तैयारी करने की आवश्यकता है। हमें दूसरों के द्वारा लिखी गई अच्छी सामग्री को साथ रखने के द्वारा तैयारी करने की आवश्यकता है। हमें प्रार्थना और हमारे जीवनों में स्वतंत्रता से काम के लिए पवित्र आत्मा को अनुमति देने के द्वारा तैयारी करने की आवश्यकता है ... आप परमेश्वर की आवाज़ को सुनने जा रहे हैं, और स्वयं अपने जीवन के लिए परमेश्वर की आवाज़ सुनने, और फिर उस आवाज़ को दूसरों के लिए भी पारित करने जा रहे हैं।
>
> — डॉ. स्टीफन जे. ब्रेमर

तैयारी की व्याख्या-शास्त्र की प्रक्रिया के अलावा, हम जाँच की प्रक्रिया का भी पता लगाएंगे। जब हम जाँच की बात करते हैं तो हमारे मन में है, बाइबल के अनुच्छेद के मूल अर्थ पर ध्यान केंद्रित करना।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

जाँच

वास्तविक रूप से, जब हम पवित्र शास्त्र की जाँच करते हैं, तो हम अपने आधुनिक संसार को पीछे छोड़ने और बाइबल के अंशों का अर्थ समझने की पूरी कोशिश करते हैं जब वे पहली बार लिखे गए थे। जाँच की प्रक्रिया में, हम स्वयं बाइबल के दस्तावेजों पर और पवित्र शास्त्र के पहले श्रोताओं पर परमेश्वर और बाइबल के मानवीय लेखकों द्वारा अभिप्रेत मूल अर्थ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। कई मायनों में, जब भी हम पवित्र शास्त्र पढ़ते हैं, तो मूल अर्थ के साथ, कुछ हद तक, कार्य करने से हम बच नहीं सकते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि हम बाइबल की छान-बीन उसकी मूल भाषा में करते हैं, तो हमें प्राचीन इब्रानी, आरामी और यूनानी ग्रंथों के भाषाई परम्परा को ध्यान में रखना होगा। भले ही हम बाइबल के आधुनिक अनुवाद पर भरोसा रखते हों, लेकिन वह अनुवाद शब्दों और व्याकरण वाली अभिव्यक्तियों के प्राचीन अर्थों के आकलन पर आधारित है। इन और कई अन्य तरीकों से, बाइबल के किसी भी अनुच्छेद का मूल अर्थ उसकी व्याख्या के लिए हमेशा महत्वपूर्ण है। इसलिए, हमें जाँच की प्रक्रिया पर भी बहुत ध्यान देना चाहिए।

व्याख्या-शास्त्र की प्रक्रियाओं में न केवल तैयारी और जाँच शामिल है, लेकिन वे अनुप्रयोग की प्रक्रिया को भी आवश्यक बनाते हैं।

अनुप्रयोग

सरल शब्दों में, अनुप्रयोग में शामिल है मूल अर्थ को समकालीन श्रोताओं के साथ उचित रीति से जोड़ना। एक बार जब हम मूल अर्थ को समझ लेते हैं, तो हम, सहस्राब्दी से होते हुए हमारे आधुनिक परिस्थिति तक जैसी यात्रा करते हैं। अनुप्रयोग में, हम उन तरीकों पर विचार करते हैं जिनमें परमेश्वर के लोगों के रूप में पवित्र शास्त्र को हम पर लागू होना चाहिए।

व्याख्या-शास्त्र की अन्य प्रक्रियाओं के समान, अनुप्रयोग से पूरी तरह बचना असंभव है। यहाँ तक कि जब हम बाइबल के किसी अनुच्छेद की केवल सतही समझ को ही पाते हैं, तब भी अपनी सोच पर, हम इसे कुछ हद तक, लागू करते हैं। बेशक, बाइबल को समझने और इसे न मानने के पाखंड के खिलाफ पवित्र शास्त्र चेतावनी देता है। इसलिए, इस श्रृंखला में हम पवित्र शास्त्र को सोच-समझकर और पूरी तरह से लागू करने पर बहुत ध्यान देंगे।

जब हम इन अध्यायों से होकर गुजरते हैं, तो हम देखेंगे कि तैयारी, जाँच और अनुप्रयोग एक दूसरे पर अत्यधिक रूप से आश्रित प्रक्रियाएँ हैं। हम किसी प्रक्रिया में तभी अच्छा कर सकते हैं जब हम दूसरों में भी अच्छा कर रहे हों। बेशक, हर किसी के पास अलग-अलग प्रवृतियाँ और योग्यताएँ होती हैं, और परिणामस्वरूप हम इन प्रक्रियाओं में से किसी एक या दो पर जोर देने को प्रवृत होते हैं। लेकिन तैयारी, जाँच और अनुप्रयोग की एक दूसरे पर निर्भरता हमें तीनों क्षेत्रों में अपने कौशल को विकसित करने की याद दिलाती है।

अब जबकि हमने बाइबल के व्याख्या-शास्त्र के हमारे परिचय में कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली को समझा दिया है, हमें अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ना चाहिए: वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र — सदियों से बाइबल के विद्वानों ने कैसे अधिक से अधिक वैज्ञानिक कार्य के रूप में पवित्र शास्त्र की व्याख्या को संबोधित किया है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र

कुछ हद तक, बाइबल वाले व्याख्या-शास्त्र का हमेशा से कुछ न कुछ वैज्ञानिक स्वभाव रहा है, और यह प्रवृति सहस्राब्दी के दौरान वैसे ही बहुत कुछ विकसित हो गई है, जैसे कि अन्य विषयों में है। इन विकासों का कारण एकदम स्पष्ट है। बाइबल को हजारों साल पहले रहने वाले लोगों द्वारा लिखा गया था। इसलिए, कई मायनों में, हम पवित्र शास्त्र को प्राचीन संसार के अन्य लेखों के समान ही मानते हैं। जब विद्वानों ने बाइबल के ऐतिहासिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए इसे देखा, तो उन्होंने अक्सर पुरातत्व, इतिहास, मानव-विज्ञान, समाजशास्त्र और भाषा-विज्ञान जैसे वैज्ञानिक विषयों से सहायता ली है। जैसा कि इन और दूसरे वैज्ञानिक विषयों में, पवित्र शास्त्र के शैक्षणिक व्याख्याकारों ने बाइबल के लिए तथ्यात्मक, या तर्कसंगत, वैज्ञानिक तरीकों को प्रयुक्त किया है।

यह देखने के लिए कि हमारा क्या अर्थ है, हम वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र से संबंधित तीन मुद्दों पर विचार करेंगे। सबसे पहले, हम बाइबल वाली इसकी बुनियादों को देखने के द्वारा इस दृष्टिकोण की वैधता को इंगित करेंगे। दूसरा, हम कुछ ऐसे ऐतिहासिक उदाहरणों का उल्लेख करेंगे जो इस तरह के व्याख्या-शास्त्र में विकासों को दर्शाते हैं। और तीसरा, हम देखेंगे कि पवित्र शास्त्र के लिए यह दृष्टिकोण व्याख्या की प्रक्रियाओं के लिए विशेष प्राथमिकताओं को कैसे स्थापित करता है। आइए पहले वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के बाइबल वाले बुनियादों की ओर मुड़ें।

बाइबल वाले बुनियाद

बाइबल के समय में रहने वाले लोग आधुनिक वैज्ञानिक नहीं थे। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि वे बेसमझ या अज्ञानी थे। इसके विपरीत, उनके परिष्कृत वास्तुशिल्प वाली उपलब्धियाँ, व्यापक समुद्री यात्राएं, अभिनव कृषि कार्यकर्म, और अनगिनत सांस्कृतिक उपलब्धियाँ दर्शाते हैं कि बाइबल के समय में लोग, बहुत कुछ आधुनिक वैज्ञानिकों के तरह ही संसार के बारे में तथ्यों के साथ काम करते और तर्कसंगत रूप में सोचते थे।

इस कारण से, हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि स्वयं बाइबल के लेखकों ने अकसर अन्य पवित्र शास्त्रों की व्याख्या तथ्यात्मक और तार्किक विश्लेक्षण की ओर अभिविन्यास के साथ की। समय को ध्यान में रखते हुए, आइए सिर्फ एक अनुच्छेद के साथ यह स्पष्ट करें कि हमारा क्या अर्थ है। रोमियों 4:3-5 में, प्रेरित पौलुस ने लिखा:

> पवित्र शास्त्र क्या कहता है? “अब्राहम ने परमेश्वर पर विश्वास किया, और यह उसके लिए धार्मिकता गिना गया।” काम करने वाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है (रोमियों 4:3-5)।

इन पदों में, पौलुस ने उत्पत्ति 15:6 से उद्धरण किया, जहाँ पर, जब अब्राहम ने परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास किया तो परमेश्वर ने इसे उसके लिए धार्मिकता “गिना।” लेकिन ध्यान दीजिए कि पौलुस ने पुराने नियम के इस अनुच्छेद को विधिपूर्वक कैसे संबोधित किया। पद 4 और 5 में, पौलुस ने “गिना जाना,” या “माना जाना” वाले शब्द का सावधानीपूर्वक विश्लेषण उस रूप में किया जैसा कि यूनानी शब्द *लौजीज़ोमाई* का अनुवाद किया जा सकता है। यूनानी भाषा के अपने ज्ञान से, उसने तर्क दिया कि, “... मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है।” लेकिन फिर उसने कहा कि जो कोई भी परमेश्वर पर भरोसा करता है, तो उसका “विश्वास,” — न कि कार्य — “उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।” इस

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

तरह, उसने इस तर्क के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि उत्पत्ति 15:6 इंगित करता है कि अब्राहम को विश्वास के माध्यम से मुफ्त उपहार के रूप में धार्मिकता प्रदान की गई थी। यहाँ यह देखना मुश्किल नहीं है कि प्रेरित पौलुस ने उत्पत्ति 15 को सावधानीपूर्वक तथ्यात्मक और तार्किक विश्लेषण के साथ प्रयोग किया।

जैसा कि यह एक उदाहरण दिखाता है, कि बार-बार बाइबल के लेखकों ने पवित्र शास्त्र की इस तरह की सावधानीपूर्वक व्याख्या को प्रस्तुत किया। और पवित्र शास्त्र के लिए उनका तरीका इंगित करता है कि बाइबल वाला वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र, स्वयं पवित्र शास्त्र में दृढ़ता से निहित है।

वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के बाइबल वाली बुनियाद को ध्यान में रखकर, आइए इस तरह की बाइबल व्याख्या के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को संक्षेप में देखें।

उदाहरण

कलीसियाई **धर्माचार्यों की रचना काल** के दौरान, बाइबल की व्याख्या में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक ऐलेक्ज़ेन्ड्रिया के ओरिगन थे जो सन् 185 से 254 तक रहे थे। जैसा कि हम इस अध्याय में बाद में देखेंगे, ओरिगन वैज्ञानिक व्याख्या से बहुत आगे निकल गए थे, लेकिन फिर भी उन्होंने स्वयं को बाइबल के सावधानीपूर्वक तथ्यात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण के लिए समर्पित कर दिया था। उदाहरण के लिए, *हेक्साप्ला* की रचना ओरिगन की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक थी, जो कि कथित तौर पर 50 से ज्यादा संस्करणों वाले 6000 पन्नों की एक रचना थी जिसमें ओरिगन ने पुराने नियम के इब्रानी और यूनानी संस्करणों की शब्द दर शब्द तुलना की। हालांकि यह रचना सदियों बाद खो गई थी, लेकिन यह फिर भी शुरूआती कलीसिया के इतिहास में वैज्ञानिक रीति से बाइबल की व्याख्या के एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पवित्र शास्त्र के लिए वैज्ञानिक तरीके विकसित करने के अन्य प्रमुख उदाहरण ओरिगन के समय बाद दिखाई दिए। उदाहरण के लिए, हिप्पो के अगस्तीन ने जो कि सन् 354 से 430 तक रहे थे, बाइबल के सावधानीपूर्वक, अक्सर श्रमसाध्य, तथ्यात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखा। और थॉमस ऐक्विनास के समय तक, जो कि लगभग 1225 से 1274 तक रहे थे, पश्चिमी मसीही धर्म में बाइबल की व्याख्या की मुख्य धारा ने अरस्तु के तर्कसंगत, वैज्ञानिक दर्शन-शास्त्र के प्रभाव को दर्शाया। ऐक्विनास और उसके अनुयायियों ने बाइबल के लिए कड़े प्रायोगात्मक और तर्कसंगत विश्लेषण को लागू किया।

दुर्भाग्य से, कलीसियाई इतिहास में इस समय तक साक्षरता दर कम थी, और बाइबल एवं अन्य पुस्तकें व्यापक रूप से उपलब्ध नहीं थीं। इसलिए, केवल कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोग ही वास्तव में पवित्र शास्त्र का अध्ययन कर पाए। परिणामस्वरूप, सामान्य लोग बाइबल को कैसे समझते हैं इसको चर्च के अधिकारियों ने नियंत्रित किया। लेकिन इस संदर्भ में, कई विद्वानों ने चर्च के प्रभुत्व से अलग, और अधिक परिष्कृत वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से पवित्र शास्त्र की व्याख्या को करना शुरू किया।

इस दिशा में सबसे शुरूआती चरणों में से एक पुनर्जागरण काल के दौरान हुआ था। 1204 में चौथे क्रूसेड में कॉन्स्टेंटिनोपल के कब्जे के बाद, वहाँ संग्रहीत कई शास्त्रीय और बाइबल की पांडुलिपियों को पश्चिम में लाया गया था। लेकिन कलीसियाई सिद्धांत के दृष्टिकोणों के माध्यम से इन प्राचीन ग्रंथों के महत्व की व्याख्या करने के बजाए, पुनर्जागरण काल के विद्वानों ने अपने व्याकरण और प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने के द्वारा इन ग्रंथों को समझने के लिए स्वयं को समर्पित किया। गुटेनबर्ग के चलते-फिरते प्रिंटिंग प्रेस की सहायता से, जो कि लगभग 1450 में उपयोग में आया, पुनर्जागरण काल के अनुसंधान व्यापक रूप से बहुत जल्द उपलब्ध होने लगे। और

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

परिणामस्वरूप, 1466 से 1536 तक रहे इरासमस जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों ने, अपने दिनों में कई लोगों को बाइबल की व्याख्या के बढ़ते हुए वैज्ञानिक तरीकों की ओर अग्रसर किया।

सोलहवीं शताब्दी में प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन बाइबल के वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र को और आगे ले गया। पुनर्जागरण के मार्ग पर चलते हुए, मार्टिन लूथर, उलरिक ज़्यूंग्ली और जॉन कैल्विन जैसे शुरूआती प्रोटेस्टेन्ट अगुवों ने बाइबल की व्याख्या पर कलीसियाई सिद्धांत के प्रभुत्व को दृढ़ता से खारिज कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने जोर दिया कि बाइबल के व्याकरण और ऐतिहासिक संदर्भों के विश्लेषण के माध्यम से पवित्र शास्त्र के अर्थ को निर्धारित किया जाना चाहिए।

यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि शुरूआती प्रोटेस्टेन्ट लोगों ने *सोला स्क्रिपचुरा* "केवल पवित्र शास्त्र" के प्रसिद्ध सिद्धांत के साथ इस महत्व को जोड़ा। प्रोटेस्टेन्ट लोग समझते थे कि बाइबल एकमात्र निर्विवाद अधिकार है, ऐसा सर्वोच्च अधिकार जिसके द्वारा अन्य सभी को आँका जाना था। बाइबल के अधिकार की सर्वोच्चता के लिए इस प्रतिबद्धता का अर्थ था कि पवित्र शास्त्र का एकमात्र अचूक व्याख्याकार स्वयं पवित्र शास्त्र है। इस तरह, शुरूआती प्रोटेस्टेन्ट लोगों के लिए, बाइबल के प्राचीन ऐतिहासिक संदर्भ में इसके व्याकरण को सावधानीपूर्वक, तर्कसंगत विश्लेषण के माध्यम से इसको समझने से ज्यादा महत्वपूर्ण बात और कोई नहीं थी।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोप में ज्ञानोदय, पवित्र शास्त्र सहित सभी सत्यों के दावों को आँकने के लिए आधुनिक, तथ्यात्मक और तर्कसंगत वैज्ञानिक मानकों पर जोर देने के द्वारा बाइबल के वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र को और भी अधिक आगे ले गया। भूवैज्ञानिकों, पुरातत्वविदों और अन्य आधुनिक वैज्ञानिकों के समान, बाइबल के विद्वानों ने पवित्र शास्त्र के अध्ययन के लिए वैज्ञानिक मानकों को ध्यान से लागू किया।

बाइबल के प्रति यह दृष्टिकोण सदियों से कई तरीकों में विकसित हुआ है। लेकिन एक स्तर पर या दूसरे तक, बाइबल के आधुनिक विद्वानों ने दो प्रमुख मार्गों का अनुसरण किया है। एक ओर, अग्रणी शैक्षणिक संस्थानों में अधिकांश व्याख्याकारों ने जिस दिशा का अनुसरण किया है उसे अक्सर बाइबल का आलोचनात्मक अध्ययन कहा जाता है। सामान्य रीति से कहें तो, बाइबल के आलोचनात्मक विद्वान वे लोग हैं जिन्होंने सोला स्क्रिपचुरा के पारंपरिक प्रोटेस्टेन्ट सिद्धांत को खारिज कर दिया है और वे सिर्फ तर्क और वैज्ञानिक विश्लेषण को ही सत्य की समझ के लिए सर्वोच्च मानक मानते हैं। बहुत हद तक, आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर, मानवता, और संसार के बारे में प्राचीन, आदिम और अविश्वसनीय दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करता है। इस दृष्टिकोण में, आधुनिक लोग पवित्र शास्त्र से कुछ तरीकों में लाभान्वित हो सकते हैं, लेकिन पवित्र शास्त्र के बारे में कोई भी निर्णय बाइबल की शिक्षाओं के बजाय वैज्ञानिक जाँच पर निर्भर होना चाहिए।

दूसरी ओर, अन्य विशेषज्ञों ने जिस मार्ग का अनुसरण किया है उसे हम आधुनिक सुसमाचारीय बाइबल का अध्ययन कह सकते हैं। सुसमाचारीय विद्वान लोग पुष्टि करते हैं कि बाइबल विश्वास और जीवन का एकमात्र निर्विवाद मानक है। वे पवित्र शास्त्र पर तथ्यात्मक और तर्कसंगत वैज्ञानिक सोच-विचार को अस्वीकार नहीं करते हैं; वे बाइबल के वैज्ञानिक विश्लेषण के कड़े अनुप्रयोग का पूरी तरह से समर्थन करते हैं। फिर भी, जब इस तरह के विश्लेषण स्पष्ट रूप से बाइबल की शिक्षाओं का खंडन करते हैं, तो अपने अधिकार के रूप में, सुसमाचारीय विद्वान लोग पूरे दिल से पवित्र शास्त्र को समर्पित होते हैं। जैसा कि हम इन सभी अध्यायों में देखेंगे, यह श्रृंखला सुसमाचारीय मार्ग का अनुसरण करती है।

> **पवित्र शास्त्र के अधिकार के लिए समर्पित होना, एक मसीही, विशेषकर प्रोटेस्टेन्ट मसीह व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण बात है ... सच्चा अधिकार, स्वीकृति देने के लिए अधिकार और शक्ति है, और मसीह व्यक्ति के जीवन में अधिकार के रूप में कार्य करने के लिए पवित्र शास्त्र विशिष्ट रूप से योग्य है। इसका एक कारण यह है कि पवित्र शास्त्र में ज्ञान और अंतर्दृष्टि है जो अन्यथा**

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

> हमारे लिए न मिल सकने वाली होगी। इसीलिए इसे प्रकाशन कहा जाता है ... दूसरा कारण यह है कि भले ही सत्य कई स्थानों में है, लेकिन पवित्र शास्त्र में जो सत्य निहित है, वह अपनी रचना और अंतिम स्वरूप में आलौकिक रूप से संचालित की गई है, जिससे कि उसमें विश्वसनीयता और अचूकता का परिमाण है जो कि सत्य के उन सभी स्रोतों में अद्वितीय है जिन तक इस संसार में हमारी पहुँच है। अब हम उस कारण को जानते हैं कि इसने उस अद्वितीय विश्वसनीयता, उस अचूकता, असफल होने की उस असमर्थता क्यों प्राप्त किया, वह है क्योंकि यह परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया था। यह परमेश्वर का वचन है, इसलिए जब हम पवित्र शास्त्र के अधिकार की बात करते हैं तब हम वास्तव में परमेश्वर के अधिकार की बात कर रहे होते हैं। और इसलिए इसके लिए समर्पित होना यह स्वीकार करना है कि हम प्राणी हैं, हम व्युत्पन्न और आश्रित प्राणी हैं। और यहाँ विरोधाभास है: समर्पण का यह कार्य हमें नीचा करने या कम शक्तिशाली बनाने की बजाय, यानी कहने का तात्पर्य है, कि यह वास्तव में सबसे अधिक सशक्त करने वाली चीज़ है जिसे हम कर सकते हैं, क्योंकि यह हमें सत्य की दिशा में स्थापित करती है, हमें दृढ़ता से जीवन और समृद्धि के पथ पर लाती है।
>
> — डॉ. ग्लेन स्कॉर्जी

वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के लिए बाइबल की बुनियादों का उल्लेख करने और कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को देखने के बाद, हमें अब तीसरे मुद्दे की ओर मुड़ना चाहिए: पवित्र शास्त्र के लिए इस दृष्टिकोण की प्राथमिकताएं।

प्राथमिकताएं

सामान्यतः कुल मिलाकर, संसार भर में बाइबल के आधुनिक सुसमाचारीय विद्वानों ने वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के लिए दृढ़ता से प्रतिबद्धता दी है। इस प्रतिबद्धता ने तैयारी, जाँच और अनुप्रयोग की प्रक्रियाओं के लिए कुछ प्राथमिकताओं को जन्म दिया है। तैयारी के लिए उनकी विशिष्ट प्राथमिकताओं के साथ शुरू करते हुए, आइए देखें कि यह कैसे सच है।

तैयारी

जैसा कि हमने पहले कहा था, जब कभी भी हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करना शुरू करते हैं तो तैयारी अपरिहार्य होती है। लेकिन बाइबल के अकादमिक व्याख्याकारों ने तैयारी के लिए उन प्राथमिकताओं को विकसित किया जो कई अन्य शैक्षिक विषयों में पाई जाने वाली बौद्धिक प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं।

कल्पना कीजिए कि आप किसी विश्वविद्यालय में जीव विज्ञान का अध्ययन करने वाले हैं और आप स्वयं को बहुत अच्छी तरह से तैयार करना चाहते हैं। इसलिए आप जीव विज्ञान के कई प्रोफेसरों से पूछते हैं, "मुझे अपनी पढ़ाई के लिए कैसे तैयार होना चाहिए?" वे शायद आपको इस तरह की बात बताएं: "जितना हो सके उतने जैविक तथ्यों को याद कर लीजिए।" और, "जीव विज्ञान में हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के बारे में जितना आप सीख सकते हैं सीख लीजिए।"

खैर, ठीक इसी तरह, यदि आप ज्यादातर सुसमाचारीय थियोलॉजीकल संस्थानों में प्रोफेसरों से पूछते हैं कि आपको उनके स्कूलों में बाइबल का अध्ययन करने के लिए कैसे तैयारी करनी चाहिए, तो उनमें से ज्यादातर इसी तरह की सलाह देंगे। वे कह सकते हैं, "इब्रानी और यूनानी भाषा सीख लीजिए।"

"बाइबल के बारे में जितना हो सके अधिक से अधिक तथ्यों को सीख लीजिए।" "व्याख्या के सही तरीकों को सीख लीजिए।" आखिरकार, बाइबल के अधिकांश विद्वान आज अपने स्वयं के जीवन-पेशे में बाइबल के बारे में तर्कसंगत और वैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर जोर देते हैं। और वे मानते हैं कि उनके छात्रों की सफलता भी ऐसा ही करने पर निर्भर है।

बेशक, स्वयं को तथ्यात्मक और तर्कसंगत तरीकों वाली समझ के साथ तैयार करना महत्वपूर्ण है। बाइबल के बारे में तथ्यों को सीखने का कोई विकल्प नहीं है। और हमें बाइबल की व्याख्या के लिए जरूरी सिद्धांतों को सीखने की अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए। लेकिन जैसा कि हम कुछ पल में देखेंगे, केवल बौद्धिक तैयारी पर ध्यान केंद्रित करना उन कुछ सबसे महत्वपूर्ण तरीकों को नज़रअंदाज करता है जिनमें हमें बाइबल की व्याख्या करने के लिए स्वयं को तैयार करना चाहिए।

तैयारी के लिए कुछ प्राथमिकताओं को देखने के बाद, आइए वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र में जाँच के लिए प्राथमिकताओं को देखें।

जाँच

सामान्य तौर पर, बाइबल के व्याख्याकार पवित्र शास्त्र की जाँच करने के दो तरीकों में अंतर करते हैं: व्याख्या और स्व-व्याख्या। व्याख्या एक यूनानी शब्द से आता है जिसका अर्थ है "से बाहर ले जाया गया" या "से निकाला गया" और इसका अर्थ है किसी पाठ्यांश से अर्थ बाहर खींचना या निकालना। इसके विपरीत, स्व-व्याख्या का अर्थ "में ले जाया गया" या "में डाला गया।" इसका मतलब है कि अनुच्छेद में अर्थ को डालना। वैज्ञानिक रूप से उन्मुख बाइबल के व्याख्याकार स्व-व्याख्या से बचने के लिए बहुत कोशिश करते हैं। इसके विपरीत, वे व्याख्या के उन सिद्धांतो को प्रयोग में लाते हैं, जिन्हें वे मानते हैं कि वे उनके लिए पवित्र शास्त्र हेतु व्याख्या वाली, न कि स्व-व्याख्या वाली समझ को सुनिश्चित करेंगे।

इस दृष्टिकोण में फिर, जाँच में काफी हद तक पवित्र शास्त्र के तथ्यों की खोज के लिए अपनी बौद्धिक तैयारियों को कार्य में लाना होता है। हम वास्तविक मूल अर्थ को जानने के लिए — न केवल किसी के विचार या एजेंडे को लेते हैं, बल्कि बारीकी से विचार की गई विधियों या व्याख्या के सिद्धांतों को सावधानीपूर्वक लागू करने के द्वारा बाइबल ग्रंथों के मूल अर्थ की जाँच करते हैं।

जैसा कि हम इस पूरी श्रृंखला में देखेंगे, इस तरह से वैज्ञानिक तरीकों को लागू करना बाइबल की व्याख्या का एक महत्वपूर्ण आयाम है। लेकिन हम यह भी देखेंगे कि पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ की सही जाँच के लिए आवश्यक सभी चीज़ों को यह शायद ही शामिल करता है।

हमने तैयारी और जाँच की प्रक्रियाओं में विद्वत्तापूर्ण, वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के लिए कुछ प्राथमिकताओं को देखा है। अब हम अनुप्रयोग की प्रक्रिया के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं। आज ज्यादातर सुसमाचारीय विद्वान बाइबल को कैसे लागू करते हैं?

अनुप्रयोग

जब मैं ईश्वरीय-ज्ञान का छात्र था, तो एक विशेष सहपाठी अक्सर प्रोफेसरों को जब वे व्याख्यान दे रहे होते थे तो बीच में टोकता था। उसके प्रश्न हमेशा एक जैसे होते थे। "प्रोफेसर, आज हमारे लिए आपकी व्याख्या के क्या मायने हैं?" "आप जो इस बाइबल के अनुच्छेद के बारे में बोल रहे हैं उसे मुझे अपने जीवन में कैसे लागू करना चाहिए?" कभी कभार को छोड़कर, उत्तर हमेशा एक जैसा होता था। प्रोफेसर मुस्कुराता था और कहता था, "यह एक बहुत अच्छा प्रश्न है। लेकिन मेरे लिए नहीं, बल्कि प्रायोगिक ईश्वरीय-ज्ञान के प्रोफेसरों के लिए।

जैसा कि यह अनुभव दिखाता है, अक्सर हर बार, बाइबल की वैज्ञानिक, विद्वेत्तापूर्ण व्याख्या में पवित्र शास्त्र के प्रायोगिक अनुप्रयोग के लिए बहुत कम स्थान है। ज्यादा से ज्यादा, यह तथ्यात्मक रूप से

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

उन्मुख आधुनिक अनुप्रयोग की ओर ले जाता है। दूसरे शब्दों में, अनुप्रयोग मुख्य रूप से उस प्रकार के तथ्यों को स्थापित करता है जिन्हें बाइबल, मसीह के आधुनिक अनुयायियों को विश्वास करना सिखाती है। हम विश्वासियों से यह विश्वास करने का आह्वान करते हैं कि बाइबल के ईश्वरीय-ज्ञान वाले और नैतिक तथ्यात्मक दावे सत्य हैं। निश्चित रूप से, इस प्रकार का अनुप्रयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है। लेकिन यह उन कई महत्वपूर्ण तरीकों की उपेक्षा करता है जिनमें पवित्र शास्त्र को आज हमारे जीवनों पर लागू किया जाना चाहिए।

> बाइबल अध्ययन तरीके महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कई बार हम उन पर जरूरत से ज्यादा जोर दे सकते हैं क्योंकि हम इसे कुछ ज्यादा ही यांत्रिक बना सकते हैं, जैसे कि यह स्वचालित है, जिससे कि यह सिर्फ उस मुद्दे की बात है, "ठीक है, मैंने इन विधियों का उपयोग किया है; मेरा तार्किक निष्कर्ष यह है," और बजाय इसके कि हमारा पूरा व्यक्तित्व इसे पकड़ ले और इसमें आनंद ले, यह विशुद्ध रीति से एक बौद्धिक अभ्यास बन जाता है। मैंने वर्षों के दौरान पाया है जब मैं ... उदाहरण के लिए, उन स्थानों में से एक जहाँ मैंने अपने स्वयं के अनुसंधान पर बहुत जोर दिया है, वह सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, यह संसार, प्राचीन संसार रहा है, क्योंकि वह एक आवश्यकता थी। बहुत सारे लोगों के पास इस तक पहुँच नहीं है, इसलिए एक विद्वान के रूप में मैं इसे सहन कर सकता हूँ। और मैंने पाया कि, जब मैंने ऐसा किया, जब यह बाइबल के पाठ्यांश में वापस आता था, तो यह मेरे लिए उन पाठ्यांशों को समझने के लिए अज्ञात ज्ञान की नई सीमा खोल देता था। ठीक उसी समय, पृष्ठभूमि में स्वयं से कोई आत्मिक जीवन नहीं था। मैंने इसमें बौद्धिक आंनद लिया, लेकिन बाइबल के पाठ्यांश में, और उसे फिर से पढ़ने में और वह सुनने में जो परमेश्वर हमारे से वास्तव में कह रहा है, अपने जीवनों को उसके लिए समर्पित करने में वास्तविक आत्मिक जीवन था, यह कुछ ऐसा है जो सिर्फ एक यांत्रिक प्रक्रिया नहीं हो सकती। यह कुछ ऐसा है जो सिर्फ हमारे हृदयों को उसके लिए समर्पित करने से आता है जिसने हमसे प्रेम किया और स्वयं को हमारे लिए दे दिया।
>
> — डॉ. क्रेग एस. कीनर

अब जबकि हमने बाइबल के व्याख्या-शास्त्र में प्रयुक्त होने वाली कुछ महत्वपूर्ण शब्दावली, और वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र की लंबे समय से चली आ रही परंपरा को देख लिया है, तो अब हमें इस अध्याय में हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए, वैज्ञानिक व्याख्या को कैसे भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के साथ जोड़ा जाना चाहिए, यानी जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो परमेश्वर के निकट आने की हमारी आवश्यकता पर जोर देने की मसीही परंपरा।

भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र

मसीह के अनुयायियों ने उस वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र को अपनाया जो सामान्य व्याख्या-शास्त्र के कई पहलूओं से मिलता-जुलता था क्योंकि मनुष्यों में पवित्र शास्त्र को लिखा था। लेकिन भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र मुख्य रूप से पवित्र शास्त्र के दिव्य लेखनकारिता पर ध्यान-केंद्रित करता है।

मसीही लोगों ने हमेशा स्वीकार किया है कि पवित्र शास्त्र के मानवीय वचन भी परमेश्वर के वचन हैं। जैसा कि 2 तीमुथियुस 3:16 हमें बताता है, कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचे गए थे, या ज्यादा शाब्दिक "परमेश्वर की श्वास" से रचे गए थे। यह तथ्य बाइबल के व्याख्या-शास्त्र को सामान्य व्याख्या-शास्त्र के अन्य पहलुओं से अलग बनाता है क्योंकि हमें पवित्र शास्त्र की व्याख्या, स्वयं परमेश्वर के जीवित वचन के रूप में भक्तिपूर्वक करनी चाहिए।

> जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो यह इतना महत्वपूर्ण है कि हम याद रखें कि हम सिर्फ मानवीय लेखकों के वचनों की ही व्याख्या नहीं कर रहे हैं, लेकिन यह कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा, त्रीएक परमेश्वर के तीसरे व्यक्ति, ने उन मानवीय लेखकों के विशिष्ट व्यक्तित्वों, शैलियों, अनुभवों के माध्यम से इन वचनों को प्रेरित किया है। जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं, तो इसका अर्थ है कि क्योंकि जिस पवित्र आत्मा ने उन वचनों को प्रेरित किया है वही हमारे भीतर विश्वासियों के रूप में, वास करता और कार्य कर रहा है, जिसका अर्थ है कि हमारे पास पवित्र शास्त्र के लेखक तक पहुँच है। और हमें इसकी सख्त जरूरत है; हमें चाहिए कि जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ें तो प्रार्थना के साथ पढ़ें, हमारे मनों को खोलने और साथ में पवित्र शास्त्र के अर्थ को हमारे मनों को समझाने के लिए हम आत्मा पर निर्भर हों।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

यह देखने के लिए कि हमारा क्या अर्थ है, हम भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को उन तरीकों में देखेंगे जो हमारी पहली वाली चर्चा के समानांतर है। सबसे पहले, हम देखेंगे कि इस प्रकार की पवित्र शास्त्र की व्याख्या बाइबल की बुनियाद पर है। दूसरा, हम बाइबल के विद्वानों के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों का वर्णन करेंगे जिन्होंने भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र का प्रयोग किया। और तीसरा, हम देखेंगे कि कैसे पवित्र शास्त्र के लिए इस दृष्टिकोण का पालन करना व्याख्या की प्रक्रियाओं के लिए हमारी प्राथमिकताओं को आकार देता है। आइए सबसे पहले भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र की बाइबल वाली बुनियादों की ओर मुड़ें।

बाइबल वाले बुनियाद

भले ही बाइबल के लेखकों ने अक्सर पवित्र शास्त्र की जाँच लगभग वैज्ञानिक तरीकों से की, फिर भी यह देखना महत्वपूर्ण है कि उन्होंने भी पवित्र शास्त्र की व्याख्या भक्तिपूर्वक की। कई बार, उन्होंने संकेत दिया कि बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में, परमेश्वर की उपस्थिति में, उन तरीकों में मसीह के अनुयायियों को पढ़ना है, जो परमेश्वर के असाधारण, और यहाँ तक कि अलौकिक अनुभवों को पैदा करते हैं।

बाइबल के लेखकों ने कई बार व्याख्या के इस आयाम की ओर इशारा किया, लेकिन अभी के लिए उदाहरण के रूप में हम सिर्फ एक अनुच्छेद का उल्लेख करेंगे। इब्रानियों 4:12 में हम पढ़ते हैं:

> क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और प्रबल है। और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और प्राण और आत्मा को, और गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है (इब्रानियों 4:12)।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

इस अनुच्छेद में, इब्रानियों के लेखक ने भजन 95 के एक हिस्से का उल्लेख किया जिसे उसने "परमेश्वर का वचन कहते हुए," इससे पहले वाले पदों में उद्धृत किया था। इससे पहले इब्रानियों 4:7 में, उसने इसी भजन का यह कहते हुए उद्धृत दिया कि स्वयं परमेश्वर "दाऊद के माध्यम से कहता है।" और इससे पहले, इब्रानियों 3:7 में, उसने भजन 95 को इन शब्दों के साथ पेश किया, "जैसा पवित्र आत्मा कहता है।"

अब, ध्यान दीजिए कि भजन के बारे में दिव्य लेखनकारिता को स्वीकार करने के बाद, इब्रानियों के लेखक ने पवित्र शास्त्र को पढ़ने के अनुभव को कैसे वर्णित किया। उसने कहा कि पवित्र शास्त्र स्वयं "जीवित और प्रबल है।" यह हमारे हृदयों की गहराई को "छेदता" है और एक ऐसी तलवार के समान जो कि "दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा" है "मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है।" वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र में हम बाइबल को एक ऐसी वस्तु के समान देखते हैं जिसकी हम चीर-फाड़ और विश्लेषण करते हैं। लेकिन इस अनुच्छेद में, इब्रानियों के लेखक ने सूचित किया कि वास्तव में पवित्र शास्त्र हमारा चीर-फाड़ और विश्लेषण करता है।

यह अनुच्छेद हमारी चर्चा के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि इब्रानियों का लेखक एक बहुत ही परिष्कृत बाइबल वाला विद्वान था। बार-बार, उसने पुराने नियम के पवित्र शास्त्र पर अंतर्दृष्टि की गहनता के साथ ऐसे चर्चा की जो कि नए नियम के कई दूसरे लेखकों से बढ़कर है। फिर भी, पवित्र शास्त्र के उसके बौद्धिक विश्लेषण ने उसे भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र से दूर नहीं किया। इसके विपरीत, उसकी बौद्धिक व्याख्याओं ने पवित्र शास्त्र की व्याख्या करने की उसकी योग्यता को उन तरीकों में बढ़ाया जो उसे अत्यधिक भावनात्मक, सम्मोहक और हृदय के परिवर्तनकारी अनुभवों में परमेश्वर के साथ सहभागिता में लाए। और इस तरह, वह हमें दिखाता है कि वैज्ञानिक और भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को एक साथ कार्य करना चाहिए।

भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र की बाइबल वाली बुनियादों को देखने के बाद, जिस तरीके से मसीह के अनुयायियों ने व्याख्या के लिए वैज्ञानिक और भक्तिपूर्ण दृष्टिकोणों को जोड़ा है उसे स्पष्ट करने के लिए हमें कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों का उल्लेख करना चाहिए।

उदाहरण

कलीसियाई इतिहास के धर्माचार्यों की रचना काल में बाइबल की भक्तिपूर्ण व्याख्या विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। हमने पहले उल्लेख किया है कि ऐलेक्ज़ैन्ड्रिया के ओरिगन बाइबल के एक कर्तव्यनिष्ठ, वैज्ञानिक विद्वान थे। फिर भी, जिस तरह से ओरिगन ने *लेटर ऑफ ओरिगन टू ग्रेगोरी* में नियोसेसिरिया के ग्रेगोरी को प्रोत्साहित किया, उसे सुनिए।

> **जब आप ईमानदारी से और परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास के साथ दिव्य वचन पढ़ने के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं, तो उन दिव्य वाचनों के अर्थ की खोज करें जो अधिकांश लोगों से छिपे हुए हैं। खटखटाने और खोजने पर ही मत रुक जाना, क्योंकि दिव्य वचनों को समझने के लिए प्रार्थना करना सबसे आवश्यक चीज़ है।**

यहाँ, ओरिगन ने ग्रेगोरी से "स्वयं को दिव्य वाचन के लिए समर्पित करने" को कहा। शब्दावली "दिव्य वाचन" बाद में लातीनी वाक्यांश लेक्शियो डिविना में व्यक्त किया गया था, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र की एक परंपरा जो आज भी विभिन्न रूपों में जारी है।

अब, पवित्र शास्त्र के लिए ओरिगन का दृष्टिकोण पूरी तरह से नव-प्लेटोवाद से प्रभावित था, विशेषकर जैसा कि इसको एलेक्ज़ेंड्रिया के पुराने नियम के यहूदी व्याख्याकार फिलो के कार्यों में व्यक्त किया गया था। इस दृष्टिकोण से, बाइबल की सतह के नीचे स्वर्गीय, और आत्मिक सत्य थे जो कि

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

"अधिकांश लोगों से छिपे हुए थे।" विश्वासियों को "परमेश्वर पर दृढ़ विश्वास की जरूरत थी" यदि वे बाइबल के छिपे हुए सत्यों की खोज करना चाहते थे। कहने का तात्पर्य है, कि उन्हें "दिव्य वचनों [के रूप में बाइबल] के अर्थ को खोजना" चाहिए। इसलिए, बाइबल के व्याख्याकारों को परमेश्वर से व्यक्तिगत आत्मज्ञान के लिए "खटखटाने और खोजने पर नहीं रुकना चाहिए।" वास्तव में, ओरिगन के अनुसार, पवित्र शास्त्र को समझने के लिए "सबसे आवश्यक बात" है "दिव्य वचनों को समझने के लिए प्रार्थना करना।" हालांकि हमें इन बातों के प्रति ओरिगन के नव-प्लेटोवाद की ओर झुकाव को खारिज करना चाहिए, फिर भी उसने कुछ बात को पहचाना जो कि पवित्र शास्त्र के बारे में निश्चित रूप से सच है। जब विश्वासी लोग पवित्र शास्त्र को पढ़ने के समय प्रार्थनापूर्वक चिंतन से परमेश्वर की खोज करते हैं, तो परमेश्वर उन्हें वह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो अन्यथा छिपी रहती है।

> ओरिगन जैसे लोगों ने इस तथ्य पर जोर दिया कि जब आप बाइबल पढ़ते हैं, तो यह वास्तव में महत्वपूर्ण है कि आप पद के आत्मिक अर्थ को प्राप्त करें। अब मैं कहना चाहूँगा कि यह वास्तव में अच्छी बात है, क्योंकि बाइबल सिर्फ एक इतिहास की पुस्तक नहीं है, यह हमारे ईश्वरीय-ज्ञान की कल्पना को उत्तेजित करने के लिए सिर्फ एक अकादमिक पाठ्यपुस्तक नहीं है। यहाँ आत्मिक महत्व है ... वास्तव में, हम विश्वास करते हैं कि दोनों एक साथ हैं, कि जैसे-जैसे हम बाइबल के वचनों के अर्थ को समझने की अपनी क्षमता में सुधार करते हैं, तो जिस संदर्भ में वे अनुच्छेद, ऐतिहासिक विवरण, आदि में व्यवस्थित हैं, वे भी कि वचन का क्या अर्थ है इसमें आत्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में हमारी सहायता करते हैं, दोनों के लिए वचन के पहले पाठकों, लेकिन बाद में हमारे लिए भी।
>
> — डॉ. सायमन वायबर्ट

मध्ययुगीन काल के दौरान, अगस्तीन और एक्विनास जैसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक व्याख्याकारों सहित पवित्र शास्त्र के लगभग हर प्रमुख व्याख्याकार ने दिव्य वाचन, या *लेक्शियो डिविना* के किसी न किसी रूप को अपनाया।

कुल मिलाकर, *लेक्शियो डिविना* चार प्रसिद्ध चरणों या प्रवृतियों में उपयोग में लाया जाने लगा: *लेक्शियो,* पवित्र शास्त्र का पढ़ा जाना; *मेडिटेशियो,* जो पढ़ा गया उसकी विषय-वस्तु पर शांत रहकर मनन करना; *ओरेशियो,* आत्मज्ञान देने के लिए परमेश्वर से ईमानदारी से प्रार्थना करना; और *कनटेम्पलेशियो,* अनुच्छेद के महत्व के बेहद सहज ज्ञान, गहन भावुकता और परिवर्तनकारी विश्वासों को प्रदान करने हेतु परमेश्वर की आत्मा के लिए शांति से प्रतीक्षा करना।

रिफॉर्मेशन के समय तक, रोम के चर्च ने सभी प्रकार की झूठी शिक्षाओं को सही ठहराने के लिए *लेक्शियो डिविना* का उपयोग किया। चर्च के अधिकायों ने दावा किया कि उनकी शिक्षाएँ परमेश्वर से आलोकिक अंतर्दृष्टि द्वारा प्राप्त हुई, लेकिन इन "अंतर्दृष्टियों" ने वास्तव में कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण तरीकों से पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं का खंडन किया। जवाब में, अधिकांश प्रोटेस्टेंट विद्वानों ने वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र पर ठीक ही उच्च महत्व को निर्धारित किया। लेकिन उन्होंने बाइबल को भक्तिपूर्वक पढ़ना नहीं छोड़ा। इसके विपरीत, उन्होंने जोर दिया कि भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को पवित्र शास्त्र के उचित व्याख्या वाले विश्लेषण से जोड़ा जाना चाहिए।

प्रोटेस्टेंट बाइबल वाली विद्या की यह विशेषता व्यापक रूप से स्वीकार नहीं की जाती है, इसलिए सिर्फ दो प्रसिद्ध उदाहरणों का उल्लेख करने में मदद मिलेगी: जॉन कैल्विन और जॉनथन ऐडवर्ड्स।

जॉन कैल्विन को प्रारंभिक सुधार का सबसे तर्कसंगत और तार्किक बाइबिल व्याख्याकार ठीक ही कहा गया है। एक वकील और पुनर्जागरण मानवतावादी के रूप में उनके प्रशिक्षण ने उन्हें इस भूमिका

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित किया। लेकिन उनकी सारी टिकाओं में, हम पाते हैं कि उन्होंने न केवल वैज्ञानिक, बल्कि भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र का अनुसरण भी दृढ़ता से किया।

सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, *हग्गै पर अपनी टिका,* भाग 2 में, उन्होंने लिखा:

> परमेश्वर की महिमा उसके वचन में इतनी चमकती है, कि हमें इससे इतना प्रभावित होना चाहिए ... जैसे कि वह हमारे पास, आमने समाने था।

पवित्र शास्त्र की व्याख्या को बेलगाव, अवैयक्तिक वैज्ञानिक गतिविधि के रूप में न मान कर, कैल्विन ने जोर देकर कहा कि "परमेश्वर की महिमा उसके वचन में इतनी चमकती है" कि जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं "हमें उससे इतना प्रभावित होना चाहिए," जैसे कि परमेश्वर स्वयं हमारे साथ "आमने सामने" है। जैसे कि यह अनुच्छेद संकेत देता है, कैल्विन ने अपने अनुयायियों को परमेश्वर की उपस्थिति के अत्यधिक प्रबल, गहन भावनात्मक और नम्र करने वाले अनुभव के रूप में पवित्र शास्त्र को पढ़ने के लिए कहा।

बहुत कुछ इसी तरह से, 1703 से 1758 तक रहे, प्रारंभिक अमेरिकी धर्मविज्ञानी जॉनाथन एडवर्ड्स ने बार-बार पवित्र शास्त्र के अपने विधि-पूर्वक तर्कसंगत और तार्किक विश्लेषणों को दिखाया। लेकिन उनके निबंध, *पर्सनल नैरेटिव* से इन वचनों को सुनिए:

> जब मैंने [1 तीमुथियुस के] वचनों को पढ़ा, तो मेरे मन में ... दिव्य व्यक्ति की महिमा का भाव आया; एक नई भावना, किसी भी उस चीज़ से बहुत अलग जैसा मैंने पहले कभी अनुभव किया था। पवित्र शास्त्र के किसी भी वचन ने मुझे कभी ऐसा कायल नहीं किया जैसा कि इन वचनों ने किया। मैंने स्वयं में सोचा, कितना अत्युत्तम वह दिव्य व्यक्ति था, और मुझे कितना आनंदित होना चाहिए, यदि मैं उस परमेश्वर का आनंद ... हमेशा के लिए ले सकता।

यहाँ हम देखते हैं कि जब एडवर्ड्स ने पवित्र शास्त्र को पढ़ा तो वह "दिव्य व्यक्ति की महिमा के भाव" में आनंदित हुआ। और परमेश्वर की आत्मा का यह अनुभव इतना शक्तिशाली था कि एडवर्डस ने "उस परमेश्वर का आनंद ... हमेशा के लिए लेना चाहा!" एडवर्ड्स ज्ञानोदय के बुद्धिवाद से अत्यधिक प्रभावित होने के लिए प्रसिद्ध हैं, और उन्होंने ठीक ही माना कि बाइबल की व्याख्या को गहनता से वैज्ञानिक होना चाहिए। लेकिन बाइबल पर सिर्फ तार्किक सोच-विचार करने के साथ एडवर्ड्स भी संतुष्ट नहीं थे। वे जानते थे कि पवित्र शास्त्र को परमेश्वर की अद्‌भुत उपस्थिति के सहज ज्ञान वाले भाव के साथ भी पढ़ा जाना चाहिए।

हमारे दिनों में, व्याख्या-शास्त्र के लिए बौद्धिक बाइबल की व्याख्या से भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण लगभग खो से गए हैं। जबकि प्रारंभिक प्रोटेस्टेंट, रोमन कैथोलिक व्याख्याकारों की कपट-योजना के जवाब में वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र की ओर मुड़े, लेकिन आज बाइबल के कई विद्वान भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को अपने बौद्धिक कौशल से कम करके आंकते हैं। वे सावधानीपूर्वक, तार्किक व्याख्या के लिए, लगभग अपना पूरा बौद्धिक ध्यान लगा देते हैं, जैसे कि यह तरीका उन सब चीज़ों को प्रदान करेगा जिसकी कि आवश्यकता हमें बाइबल से है। लौलीनता से प्रार्थना, उपवास और चिंतन के द्वारा परमेश्वर से दिव्य प्रकाशन को खोजना सुसमाचारीय विद्या से, ये सब खो से गए हैं। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि जब हम औपचारिक, शैक्षणिक व्याख्या करते हैं, तो हम वैज्ञानिक एवं भक्तिपूर्ण दोनों व्याख्या-शास्त्र का अनुसरण करें। हमें दोनों चरम सीमाओं पर न जाने के लिए सावधान रहने की आवश्यकता है, लेकिन कई प्रोटेस्टेंट व्याख्याकारों ने अतीत में इसे अच्छे से किया है, और हम उनके उदाहरण का पालन करने में समझदार होंगे।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के बाइबल वाले बुनियादों और उन धर्मविज्ञानियों के कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों को ध्यान में रखकर जिन्होंने वैज्ञानिक और भक्तिपूर्ण दृष्टिकोणों को एक साथ जोड़ा, आइए इस प्रकार के व्याख्या-शास्त्र की प्राथमिकताओं की ओर संक्षेप में देखें।

प्राथमिकताएं

मसीह के अधिकांश अनुयायी एक भक्तिपूर्ण आत्मा के साथ पवित्र-शास्त्र को पढ़ना शुरू करते हैं। लेकिन जब वे बाइबल की बौद्धिक व्याख्या में निपुर्ण हो जाते हैं, तो वे अक्सर भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के महत्व के दर्शन को भूल जाते हैं। लेकिन बाइबल की वैज्ञानिक व्याख्या अक्सर इतनी ज्यादा बौद्धिक और विश्लेषणात्मक होती है कि हम वास्तव में उस बात को भूल जाते हैं जो मसीह के साथ हमारी संबंध में कभी महत्वपूर्ण था — परमेश्वर के वचन के माध्यम से उसके व्यक्तिगत और शक्तिशाली रूप से परिवर्तनकारी अनुभव। इस कारण से, हमें देखना चाहिए कि कैसे जब हम सभी तीनों व्याख्या-शास्त्र वाले दृष्टिकोणों के साथ कार्य करते हैं, तो पवित्र-शास्त्र के लिए भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण को उन प्राथमिकताओं के साथ जो हमारे पास हैं समायोजन करना चाहिए।

हम भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र की प्राथमिकताओं की जाँच ठीक उसी रूप में करेंगे जैसे हमने वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र वाली प्राथमिकताओं को देखा था। सबसे पहले, हम तैयारी के लिए प्राथमिकताओं को तय करेंगे। दूसरा, हम भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र में प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करेंगे। और अंत में, इस तरह की व्याख्या के आधुनिक अनुप्रयोग पर हम कुछ विचार करेंगे। आइए तैयारी की प्राथमिकताओं के साथ शुरू करें।

तैयारी

दुर्भाग्य से, मसीह के कई वफादार अनुयायी विश्वास करते हैं कि जब हम पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं, तो हमारे पास परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के अनुभव पर कोई भी नियंत्रण नहीं होता है। यह या होता है या नहीं होता है। और ऐसा कोई भी तरीका नहीं जिससे हम स्वयं को इसके लिए तैयार कर सकते हैं। लेकिन याकूब 4:8 में जिस रीति से याकूब ने इस गलत धारणा को संबोधित किया उसे सुनिए:

> परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा (याकूब 4:8)।

यह वाक्यांश “परमेश्वर के निकट आओ” पुराने नियम से आता है। विश्वासी अराधक मिलाप वाले तंबू और मंदिर में परमेश्वर की विशेष उपस्थिति के “निकट आएंगे।” बेशक, परमेश्वर हर जगह है और जब कभी वह चाहे तो स्वयं को आश्चर्यजनक तरीकों से प्रकट कर सकता है। लेकिन याकूब के वचन मानवीय जिम्मेदारी पर बाइबल के जोर देने को दर्शाते हैं। यदि हम परमेश्वर की विशेष उपस्थिति का अनुभव चाहते हैं, तो हमें उसके निकट आना अवश्य है। और परमेश्वर हमारे निकट आने के द्वारा प्रत्युत्तर देगा।

सामान्य शब्दों में, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के लिए तैयारी में परमेश्वर के लिए पवित्रीकरण या पवित्र समर्पण शामिल है। जैसा कि पवित्र-शास्त्र सिखाता है, हमें उन सभी चीज़ों को स्वयं से दूर करना है जो परमेश्वर के साथ सहभागिता में आड़े आते हैं और उन सभी चीज़ों को खोजना है जो उसे बढ़ाते हैं। कहने की जरूरत नहीं, इस तरह की तैयारी में बहुत सारी चीज़ें शामिल है कि उन सब का हम उल्लेख पाते, लेकिन तीन सामान्य श्रेणियों की बात करके उनके विस्तार का एहसास करना मदद करता है: वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक तैयारी।

सबसे पहले, वैचारिक तैयारी के माध्यम से पवित्र शास्त्र में हम परमेश्वर की उपस्थिति के लिए तैयार होते हैं। इससे हमारा अर्थ है कि परमेश्वर के सत्य वचन के लिए अपने विश्वासों को अनुरूप बनाने की हम पूरी कोशिश करते हैं। परमेश्वर, मानव जाति, और संसार के बारे में गलत धारणाओं पर विश्वास

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

करना परमेश्वर के साथ सहभागिता में बाधा पैदा करता है। जैसा कि हमने देखा है, बाइबल के विद्वानों ने अवधारणाओं के अपेक्षाकृत संकीर्ण समूह पर ध्यान केंद्रित किया है जो उनके शैक्षणिक महत्व के साथ फिट बैठते हैं। लेकिन परमेश्वर की आत्मा के द्वारा पवित्रीकरण परमेश्वर के मन के साथ हमारे सभी विचारों को अनुरूप बनाने की लालसा पैदा करता है, और जब हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या करते हैं तो यह इच्छा उसकी उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए हमें तैयार करती है।

दूसरा, हम तब भी परमेश्वर के निकट आते हैं जब हम व्यवहारिक तैयारी के माध्यम से पवित्र-शास्त्र को पढ़ते हैं। पवित्र-शास्त्र में, परमेश्वर की इच्छा के विपरीत कार्यों को करना, परमेश्वर की अनुग्रहकारी उपस्थिति का अनुभव करने के लिए सबसे बड़े रुकावटों में से एक है। भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के लिए तैयारी में शामिल है अपनी असफलताओं पर पश्चाताप करना और उन तरीकों में व्यवहार करने की निष्कपट इच्छा करना जो परमेश्वर को भाते हैं।

तीसरा, हमें भावनात्मक तैयारी के माध्यम से परमेश्वर की निकटता खोजने के लिए तैयार होना चाहिए। भावनात्मक तैयारी में हमारे सभी मनोभाव शामिल हैं — नाश होने वाली अभिलाषाओं से लेकर परमेश्वर, मनुष्य और बाकी की सृष्टि के बारे में हमारी स्थायी भावनाओ तक। पवित्र-शास्त्र बार-बार घमंड, घृणा और हृदय की कठोरता के खिलाफ चेतावनी देता है। ये और इन्ही के समान भावनाएँ परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में जाने में बाधा हैं। लेकिन नम्रता, प्रेम, हृदय की कोमलता और इन्ही के समान अन्य परमेश्वर के साथ सहभागिता करने के लिए मार्ग खोलते हैं। इस कारण से, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र के लिए तैयारी को न सिर्फ हमारे विचारों और व्यवहारों को, बल्कि साथ में हमारी भावनाओ के पूरे विस्तार को भी संबोधित करना चाहिए।

> समझदारी और ईमानदारी से बाइबल की व्याख्या करना सिर्फ दिमाग की ही बात नहीं है। यह वास्तव में दिल, संपूर्ण व्यक्ति की बात है। और इसका अर्थ है — और यह, मैं सोचता हूँ, उस व्यक्ति के लिए एक चुनौती है जिसके पास परमेश्वर के वचन की व्याख्या करने और सिखाने की जिम्मेदारी है — इसका अर्थ है कि बाइबल की हमारी समझ की प्रभावशीलता पर हमारे हृदय की स्थिति, मसीह के साथ हमारा संबंध वास्तव में प्रभाव डालता है। और इसलिए अपने पापों को मानने, हर दिन सुसमाचार को पकड़े रहने में ईमानदार होना बहुत ही महत्वपूर्ण है। और जब हम आत्मिक रूप से भटकना शुरू करते हैं, और विशेषकर यदि हम जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पाप में भटकते हैं, तो इसका बहुत ही नकारात्मक प्रभाव हो सकता है। मैं मानता हूँ कि परमेश्वर के वचन को सच्ची रीति से समझने की हमारी क्षमता पर यह नकारात्मक प्रभाव डालता है। और एक बात जो यह विशेष रूप से करता है वह है कि हमें उन सख्त आज्ञाओं को मानने से पीछे हटता जो हमारे पास पवित्र-शास्त्र में है, और हम उन्हें पूरी ईमानदारी से नहीं मानते हैं क्योंकि हम उन आज्ञाओं को मरोड़ने की कोशिश कर रहे होते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है — ईमानदारी से बाइबल की व्याख्या के लिए हृदय का सुव्यवस्थित होना अनिवार्य है।
>
> — डॉ. फिलिप्प रायकेन

तैयारी के लिए इन प्राथमिकताओं का ध्यान में रखते हुए, हमें व्याख्या-शास्त्र की दूसरी प्रक्रिया की ओर मुड़ना चाहिए, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र में मूल अर्थ की जाँच।

जाँच

भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र उन तरीकों में पवित्र शास्त्र के मूल अर्थ की हमारी जाँच को आकार देने को आवश्यक बनाते हैं जो हमें परमेश्वर के पास लाते हैं। भक्तिपूर्ण जाँच में हम बाइबल के लेखकों की परमेश्वर की निकटता के अनुभव के संदर्भ में मूल अर्थ को देखते हैं और साथ में वे किस रीति से अपने मूल श्रोताओं को परमेश्वर के निकट लाने का इरादा रखते थे। ऐसा करने के कई तरीके हैं, लेकिन सरलता के लिए, हम एक बार फिर जाँच के वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक आयामों के संदर्भ में बात करेंगे।

पहले स्थान पर, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को वैचारिक जाँच की आवश्यकता होती है — उन अवधारणाओं की ओर ध्यान देना जिन्हें अपने मूल श्रोताओं को बताने के लिए परमेश्वर और प्रेरणा पाए उसके लेखकों ने इरादा रखा था। जैसा कि हमने देखा, भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र को पवित्र शास्त्र के तथ्यों के साथ निकटता से जोड़ा जाना चाहिए ताकि यह अटकलबाजी या त्रुटि में न बदल जाए। हमने पहले ही ध्यान दिया है कि इस कार्य के लिए वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र को अच्छी तरह से डिज़ाइन किया गया है। लेकिन भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र में हम कुछ वैचारिक प्रश्नों को पूछते हैं, जो आमतौर पर वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र में संबोधित नहीं किए जाते हैं। यह पाठ्यांश लेखक के परमेश्वर वाले अनुभव को कैसे उजागर करता है? यह कैसे दर्शाता है कि परमेश्वर की निकटता का अपने श्रोताओं को अनुभव कराने के लिए लेखक ने कैसे इरादा किया?

दूसरे स्थान में, भक्तिपूर्ण जाँच को पवित्रशास्त्र के मूल अर्थ के व्यवहारिक आयामों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमने पहले कहा था कि मानव व्यवहार या तो परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में आने की हमारी क्षमता को बढ़ाता है या उसमें बाधा डालता है। इस कारण से, जैसे-जैसे बाइबल के लेखकों ने लिखा उन्होंने यह भी बताया कि कैसे उनके कार्यों और उनके श्रोताओं के कार्यों ने परमेश्वर की निकटता के उनके अनुभव को प्रभावित किया।

तीसरे स्थान में, भक्तिपूर्ण जाँच को मूल अर्थ के भावनात्मक आयामों को भी बाहर निकालना चाहिए जब वे परमेश्वर की निकटता का वर्णन करते हैं। यद्यपि वैज्ञानिक व्याख्या अक्सर इसे नजरअंदाज करती है, बाइबल के लेखकों ने अपने स्वयं की भावनाओं को व्यक्त किया और उनके मूल श्रोताओं की भावनाओं को प्रभावित करने की कोशिश की। बाइबल के लेखकों और उनके श्रोताओं की खुशी, संदेह, दुःख और भय हर मोड़ पर दिखाई देते हैं। और जैसा कि हमने पहले ही सुझाव दिया था, परमेश्वर के गंभीर अनुभवों में तीव्र भावनाएँ शामिल हैं। इसलिए, हमें सदैव ध्यान देने की आवश्यकता है कि बाइबल के पाठ्यांश लेखकों और उनके श्रोताओं की भावनाओं के बारे में क्या उजागर करते हैं और कैसे उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति के अपने अनुभव का वर्णन किया।

तैयारी और जाँच की प्राथमिकताओं पर विचार करने के बाद, हमें भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र में अनुप्रयोग की प्राथमिकताओं का भी उल्लेख करना चाहिए।

अनुप्रयोग

जब हम परमेश्वर की उपस्थिति में पवित्र शास्त्र को पढ़ते हैं, तो हम उस विशेष रीति से परमेश्वर के वचन को लागू करने के लिए समर्पित होते हैं जैसा कि परमेश्वर ने इरादा किया था। हम बाइबल को एक निर्जीव वस्तु के समान नहीं मानते हैं जिसे मात्र नश्वर लोगों ने हजारों वर्ष पहले लिखा था। इसके विपरीत, हम पवित्र शास्त्र की व्याख्या ऐसे करते हैं जैसे कि आज हमारे लिए परमेश्वर का वचन जीवित है। हम इसे कैसे पूरा करते हैं इस बात की बेहतर समझ पाने में हमारी मदद करने के लिए, हम एक बार फिर अनुप्रयोग के वैचारिक, व्यवहारिक और भावनात्मक आयामों के बारे में बात करेंगे।

वैचारिक स्तर पर, भक्तिपूर्ण अनुप्रयोग इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि कैसे परमेश्वर पवित्र शास्त्र के माध्यम से उसके बारे में, मानवता और बाकी की सृष्टि के बारे में हमारी अवधारणाओं को

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

प्रभावित कर रहा है। जब हम गहन प्रार्थना और उसके वचन पर मनन के माध्यम से परमेश्वर की आत्मा के प्रकाशन को खोजते हैं, तो हम पाते हैं कि परमेश्वर का आत्मा उसके बारे में, मानवता और बाकी की सृष्टि के बारे में हमारी अवधारणाओं को प्रमाणित करता, बढ़ाता और सही करता है। और जब हम इन सुधारों को अपने पूरे हृदय से अपनाते हैं तो हम स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिति की आशीष के और निकट खींचा हुआ पाते हैं।

व्यवहारिक स्तर पर, भक्तिपूर्ण अनुप्रयोग इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि जब हम पवित्र शास्त्र पर मनन करते हैं तो कैसे हमारे व्यवहार परमेश्वर की उपस्थिति के द्वारा प्रभावित होते हैं।

जब हम पवित्र-शास्त्र पढ़ते हैं, तो हम नम्रता से उन सब बातों को खोलकर बता देते हैं जो हमने किए हैं। और जब हम प्रार्थनापूर्वक परमेश्वर के निकट आते हैं, तो उसका आत्मा परमेश्वर की भविष्य वाली सेवा के लिए हमारे कार्यों की पुष्टि करता और बढ़ाता है। और इसके अलावा, जब हम आत्मा पर सचेत निर्भरता में पवित्र शास्त्र पर मनन करते हैं, तो हम पाते हैं कि वह उन कार्यों को करने के लिए हमें सही और सशक्त बनाता है जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं।

अंत में, भावनात्मक स्तर पर, पवित्र शास्त्र का भक्तिपूर्ण अनुप्रयोग इस बात पर जोर देता है कि कैसे हमारे मनोभाव और भावनाएं पवित्र शास्त्र के पढ़ने के द्वारा परमेश्वर की विशेष उपस्थिति में प्रभावित होते हैं। अपनी बुद्धि में, परमेश्वर का आत्मा उचित समय पर पछतावा, शोक और दुःख को लाता है। परमेश्वर का आत्मा हमारे हृदयों को आनंद, शांति और प्रेम से भी भर देता है। जब हम पवित्र शास्त्र को परमेश्वर के जीवित वचन के रूप में पढ़ते हैं, तो उसके प्रति, दूसरे लोगों और बाकी की सृष्टि के प्रति हमारी भावनाएं शांत रूप में हम पर उमड़ सकते हैं। या, आत्मा की इच्छानुसार, वे हमारे हृदयों को भी भर सकते हैं जिससे कि हम परमेश्वर की उपस्थिति में अभिभूत हो जाते हैं। जो भी मामला हो, जब हम सीखते हैं कि पवित्र शास्त्र की व्याख्या परमेश्वर की निकटता के प्रकाश में कैसे करें, तो हम पाएंगे कि पवित्र शास्त्र जीवित है और हमारा रूपांतरण करते हैं, न सिर्फ हमारी अवधारणाओं और व्यवहारों में, बल्कि हमारी भावनाओं की गहराई में भी।

> हमें यह पहचानना होगा कि जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो बाइबल हमें सिर्फ अपनी सोच ही बदलने के लिए नहीं कह रहा है। वह हमसे हमारे जीवनों को बदलने के लिए कह रहा है। और इसलिए एक बात जो मैं करना पसंद करता हूँ जब मैं बाइबल पढ़ने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करता हूँ, वह है कि पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग के लिए तीन भागों में विचार करना: सोचना, महसूस करना, करना। बौद्धिकतावाद तब है जब हम इन स्थानों में से सिर्फ एक पर बाइबल को लागू करते हैं — हम कैसे सोचते हैं। लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम उसे अपने पूरी बुद्धि से प्रेम करें, इसलिए सोच परमेश्वर के लिए मायने रखती है। लेकिन हम कैसे महसूस करते हैं यह भी परमेश्वर के लिए मायने रखती है — हमारा भावनात्मक जीवन, दिन भर का हमारा स्वभाव। परमेश्वर के लिए यह मायने रखता है कि हमारी भावनाएं क्या हैं। और भावनाएं परमेश्वर के प्रति वफादार हो सकती हैं, और भावनाएं परमेश्वर के प्रति वफादार *नहीं* भी हो सकती हैं। तटस्थ भावनाएं जैसी कोई चीज़ नहीं है। लेकिन "करने" वाला पहलू भी है। जब हम पवित्र शास्त्र को लागू करते हैं, तो परमेश्वर सिर्फ यही नहीं चाहता कि हम सोचें कि कैसे यह हमारी भावनाओं को प्रभावित करता या हमारी बुद्धि को प्रभावित करता है, लेकिन साथ में कि यह कैसे हमारे कार्यों को प्रभावित करता है। और इसलिए जब हम इस ढाँचे का उपयोग करते हैं — सोचना, महसूस करना, करना — तो हम कैसे बाइबल के बारे में सोचते हैं उसके लिए यह वास्तव में एक संतुलन प्रदान करता है।

— डॉ. माइकल जे. क्रूगर

उपसंहार

बाइबल के व्याख्या-शास्त्र के इस परिचय में, हमने तीन मुख्य अवधारणाओं पर ध्यान केंद्रित किया है। सबसे पहले, इस विषय पर स्वयं को उन्मुख करने के लिए जिन कुछ आधारभूत शब्दावली की हमें आवश्यकता है उसकी हमने खोज की। दूसरा हमने देखा कि उनकी परिशुद्धता और उनकी तार्किक स्थिरता के लिए वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र महत्वपूर्ण है। और तीसरा, हमने देखा कि भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र — परमेश्वर की उपस्थिति में पवित्र शास्त्र को पढ़ना — वैज्ञानिक व्याख्या-शास्त्र के प्रतिसंतुलन के लिए महत्वपूर्ण है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के बारे में अधिक सीखने से, परमेश्वर से सभी प्रकार की नई अंतर्दृष्टि और आशीषों का मार्ग खोल देता है। परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के समान जो भी कुछ हम विश्वास करते हैं, जो भी कुछ हम करते हैं और जो भी कुछ हम महसूस करते हैं, उन सभी बातों के लिए उसके लिए पुराना एवं नया नियम मानकों को निर्धारित करता है। और जब हम आने वाले अध्यायों में कई और विवरणों पर विचार करते हैं, तो हम यह देखने पाएंगे कि वैज्ञानिक और भक्तिपूर्ण व्याख्या-शास्त्र दोनों के लिए स्वयं को समर्पित करना कितना आवश्यक है। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम अपने जीवनों के हर आयाम में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा के लिए नए तरीकों को खोजेंगे।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिए, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org